Today's Poem – 02.05.2014

बाप आये हैं तुम्हें चक्षु देने सिविल

इसलिए यह आँखें कभी भी नहीं होनी चाहिए क्रिमिनल

बाप की श्रीमत है तुम्हें नर्क और नर्कवासियों से बुद्धियोग हटाकर स्वर्ग को याद करना है

तुम्हें बुद्धि से पुरानी दुनिया को भूलना है

सतगुरु बाप की याद से बुद्धि को सतोप्रधान बनाना है

सच्चा बनना,आस्तिक बनकर आस्तिक बनाने की सेवा करना है

अब घर जाना है

इसलिए दैवीगुण धारण करने हैं और पावन बनना है

मैं पदमापदमपति हूँ

कल्प—कल्प का विजयी हूँ!!

शुक्रिया बाबा!!

ॐ शान्ति !!!